हिमाचल प्रदेश के लिए वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड से संबन्धित "प्री-रिलीज़ परामर्श बैठक" का आयोजन (14 मई, 2024)

FOREST SOIL HEALTH CARDS PRE-RELEASE STAKEHOLDER'S CONSULTATION MEET FOR HIMACHAL PRADESH

ICFRE- Himalayan Forest Research Institute (HFRI), Shimla organised a Pre- release consultation meeting on FOREST SOIL HEALTH CARDS (FSHCs) of Himachal Pradesh in hybrid mode at Forest H.Q. Talland, Shimla on dated 14-05-2024. The meeting was chaired by Sh. Rajiv Kumar, Principal Chief Conservator of Forests & Head of Forest Force, Himachal Pradesh. Besides, Dr. Pushpender Rana, Addl.PCCF, Smt. Preeti Bhandari, DCF, Sh. Mrityunjay Madhav, DCF(P&L), Dr. Sandeep Sharma Director (In-charge) HFRI, Dr. RK Verma,Sc.–G, Dr. Vijender Pal Panwar ,Sc.-F were also present physically and CCFs, CFs and divisional forest officers from 37 forest divisions of H.P., Scientist of ICFRE institutes joined the meeting virtually.

In the beginning, Dr. Sandeep Sharma Director (I/C), HFRI extended a warm welcome to Sh. Rajiv Kumar PCCF& HOFF(H.P.), distinguished forest officers and other participants of the meeting. In his address, Dr. Sandeep Sharma highlighted to importance of characterisation of forest soils and said that forest soils are losing its inherent moisture retention potential, and as a whole soil ecosystem is under stress. He further told that Indian Council of Forestry Research and Education (ICFRE) is implementing - All India Coordinated Research Project (AICRP-22) on 'Preparation of Forest Soils Health Cards under Different Forest Vegetations in All the Forest Divisions of India' and nine ICFRE institutes are participating in this project. He further informed that under this project HFRI has prepared the FSHCs of 37 territorial forest divisions of Himachal Pradesh after collecting soil samples from given locations under different forest types in the state, and analysing the samples for different parameter as per standard methodology.

Thereafter, Sh. Rajiv Kumar PCCF& HOFF (H.P.) addressed the participants. In his presidential address, he emphasised on the various aspects related to forest soil ecosystem and raised concerns over the depleting levels of organic carbon in forest soils. In broad perspective, he explicitly brings out the significance of study in relation to Green India Mission. Praising the efforts of HFRI, he suggested that species wise prescription for planation on the basis of FSHCs will be useful for forest department.

During the technical session, Dr. V.P. Panwar, Scientist-F, FRI, Dehradun and National Project Coordinator (NPC) gave a presentation focussing on the concept, methodology framework and outcome of the project. He asserted that forest soils are as important as cultivated soils and healthy soils play crucial role in sustainable growth of forests and plantations. He elucidated that AICRP-22 on Forest Soil Health Cards (FSHCs) has been envisaged to improve the status and quality of degraded soils in forest landscapes. Dr. Panwar also shared that after thorough discussions & deliberations, forest division has been taken as sampling unit and GIS&RS based methodology adopted to generate the country wide statistically validated sampling points in various forest types. He told the participants that uniform analytical standard protocols have been followed for analysis of forest soil samples by all the institutes. Further, the NPC also shared that capacity building programmes to front-line functionaries has also been proposed under the project to impart training on soil test based nutrient management, *etc*.

In continuation of this, Dr. R.K.Verma, Project Investigator (PI) of AICRP-22 from HFRI gave a detailed power point presentation. Firstly, Dr. RK Verma, provided an overview of forest types and soils of Himachal Pradesh. He informed the participants that total 635 sampling locations has been given to HFRI and 1905 soil samples have been collected from different forest types in 37 territorial forest divisions. Further, Dr. Verma also discussed the forest division- wise values of primary, secondary and micro-nutrients. The PI also shared the prototype of FSHCs of Lahaul, Hamirpur and Parvati Forest divisions with the participants. After the presentations by NPC and PI, comments/inputs of the participants were invited for discussions.

Sh. Abhilash Damodran, CCF, Chamba Circle enquired about the study of microbial health of forest soils under this project. The NPC endorsed that soil biota are very important part of soil ecosystem. But, as of now only 12 comprehensive chemical attributes and bulk density of forest soils samples have been assessed in AICRP-22. He added that soil microbial health part may be taken during the next phases.

Sh. E. Vikram, CCF, Dharamshala Circle asked that how the soil organic carbon studies carried out in the project will help in achieving the commitment of nationally determined targets of CO_2 mitigation. The NPC told that soil samples have been taken from surface and sub-surface layers. On the basis of SOC, gravel per cent and bulk- density, the study will help to estimate the Soil Carbon Stock.

Sh. M. Madhav, DCF (P&L), Talland , was interested to know how the FSHCs can help to check the land degradation and useful in afforestation activities. Dr. RK Verma, PI of the project responded that the purpose of the FSHCs is to improve the soil health of degraded areas and in each card organic and in-organic recommendations has been suggested. Moreover, the card has been developed in simple bi- lingual form. Finally the discussions

were summed up and the stakeholders necessitated the need to narrow down the study on compartment level. The proceedings of the meeting were coordinated by Dushyant Kumar, Sr. Technical Officer HFRI and it concluded with formal vote of thanks.

Glimpses of Meeting

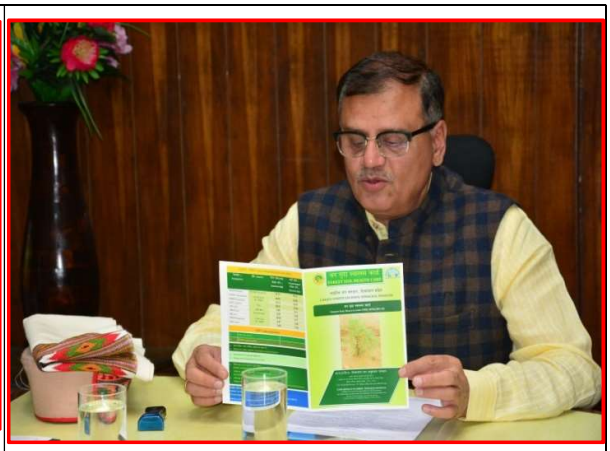

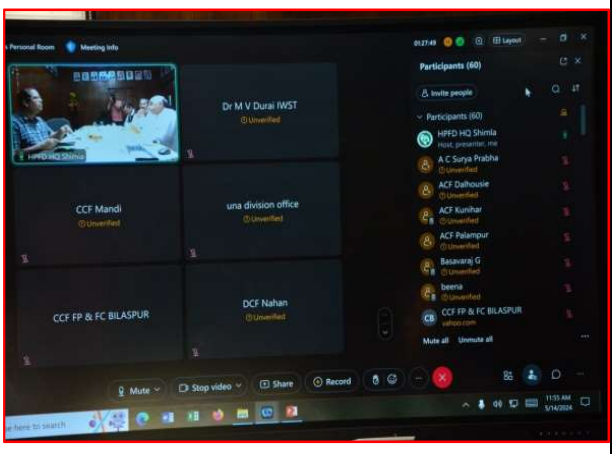

Media Snippets

जंगलों में मिट्टी की जांच के आधार पर लगाए जाएंगे पौधे

हिमाचल के सभी 37 मंडलों के बनेंगे वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड, एच.एफ.आर.आई. 2-3 माह में तैयार कर वन विभाग को सौंपेगा कार्ड

शिमला : हिमाचल प्रदेश वन मुख्यालय में आयोजित परामर्श बैठक की अध्यक्षता करते पी.सी.सी.एफ. राजीव कुमार। (नरेश)

शिमला, 14 मई (भूपिन्द्र): हिमाचल प्रदेश के जंगलों में अब मिट्टी की जांच रिपोर्ट व उनके स्वास्थ्य की स्थिति के आधार पर पौधे लगाए जाएंगे। इसके लिए एच.एफ.आर.आई. (हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान) हिमाचल के सभी 37 वन मंडलों के वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड तैयार कर रहा है, जो 2-3 माह में बनकर तैयार हो जाएंगे। इसके बाद इन्हें वन विभाग को सौंपा जाएगा। इस कार्ड केंद्र सरकार के एक प्रोजैक्ट के तहत बनाए जा रहे हैं, जो आगामी दिसम्बर में समाप्त हो रहा है।

एच.एफ.आर.आई. द्वारा किए गए अध्ययन में कुछ वन मंडलों में नाईट्रोजन, फासफोरस आदि की कमी पाई गई है। यह अध्ययन 12 पैरामीटर पर किए जा रहे हैं। अध्ययन का कार्य पूर्ण होने के बाद एच.एफ.आर.आई. वन विभाग के अधिकारियों को प्रशिक्षण देगा तथा उसके आधार पर वनों में पौधारोपण किया जाएगा तथा पौधारोपण के समय उन वनों में गोबर, यूरिया, नाईट्रोजन, फासफोरस आदि खाद का प्रयोग किया जाएगा, जहां पर इसकी कमी है।

मृदा स्वास्थ्य कार्ड के विषय पर मंगलवार को शिमला में एक परामर्श बैठक का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता पी.सी.सी.एफ. राजीव कुमार द्वारा की गई। इसमें ए.पी.सी.सी.एफ., विभिन्न वन वृत्तों के संरक्षण और राज्य के 37 वन मंडलों के वन मंडल अधिकारियों ने वर्चुअल माध्यम से भाग लिया। इस मौके पर संस्थान के निदेशक डा. संदीप शर्मा ने वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड को लेकर जानकारी दी तथा वन पारिस्थितिक तंत्र में मृदा के महत्व पर प्रकाश डाला तथा कहा कि संस्थान द्वारा देश के 788 वन मंडलों में यह स्वास्थ्य कार्ड तैयार किए जा रहे हैं।

पी.सी.सी.एफ. राजीव कुमार ने वन मृदा स्वास्थ्य समग्र स्वास्थ्य पर जोर दिया और वन मृदा में ऑर्गेनिक कार्बन के घटते स्तर पर चिंता व्यक्त की।

उन्होंने वन मृदा की गुणवत्ता बताने के लिए एच.एफ.आर.आई. के प्रयासों की सराहना की और मिट्टी विश्लेषण आधार पर उचित प्रजातियों के पौधारोपण के सुझाव प्रस्तुत करने की आवश्यकता पर जोर दिया। परियोजना के अन्वेषक व वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. आर.के. वर्मा ने हिमाचल प्रदेश के वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड पर एक विस्तृत प्रस्तुति दी।

रेंज स्तर पर बनाए जाएंगे वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड : हिमाचल प्रदेश में अब दूसरे चरण में रेंज स्तर पर वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड बनाए जाएंगे। इसके लिए केंद्र सरकार नया प्रोजैक्ट ला सकती है। उधर बैठक के दौरान तकनीकी सत्र में वरिष्ठ वैज्ञानिक एच.एफ.आर.आई. देहरादून डा. विजेंद्र पाल पंवार ने परियोजना की अवधारणा, इसके उद्देश्यों और परिणामों के बारे में जानकारी दी।

वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड तैयार करेगा एचएफआरआइ शिमला

हिमाचल में वन मृदा में आर्गेनिक कार्बन कम होना चिंता का विषय

शिमला में मंगलवार को आयोजित बैठक में भाग लेते पदाधिकारी • जागरण

जागरण संवाददाता, शिमला : हिमाचल में वन मृदा में आर्गेनिक कार्बन कम होना चिंता का विषय है। अधिक पैदावार के लिए मिट्टी में अंधाधुंध रसायनों का प्रयोग किया जा रहा है। इससे मिट्टी की गुणवत्ता व पोषक तत्व नष्ट हो जाते हैं। मिट्टी में जैविक कार्बन की मात्रा कम होने पर मिट्टी बंजर हो जाती है। इससे बचने के लिए फसलों में जैविक और कार्बनिक खादों का प्रयोग करना जरूरी होता है। मिट्टी की भौतिक स्थिति और जैविक कार्बन बढ़ाने से पैदावार भी बढ़ाई जा सकती है। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान (एचएफआरआइ) शिमला ने हिमाचल प्रदेश वन मुख्यालय टालैंड में हाइब्रिड मोड वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड विषय पर परामर्श बैठक का आयोजन किया। बैठक की अध्यक्षता पीसीसीएफ राजीव कुमार ने की। बैठक में एपीपीसीएफ, सीसीएफ, विभिन्न वन वृत्तों के संरक्षक और ह37 मंडलों के अधिकारियों ने आनलाइन भाग लिया।

संस्थान के निदेशक (प्रभारी) डा. संदीप शर्मा ने वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड तैयार करने के बारे चर्चा की और वन पारिस्थितिक तंत्र में मृदा के महत्व पर प्रकाश डाला। वन विभाग के पीसीसीएफ राजीव कुमार ने वन मृदा स्वास्थ्य समग्र स्वास्थ्य पर जोर दिया और वन मृदा में आर्गेनिक कार्बन के घटते स्तर पर चिंता व्यक्त की। उन्होंने वन मृदा की गुणवत्ता बताने के लिए एचएफआरआइ के प्रयासों की सराहना की और मिट्टी विश्लेषण आधार पर उचित प्रजातियों के पौधरोपण के सुझाव प्रस्तुत करने की आवश्यकता पर जोर दिया।

पहल वन विभाग के पास मिट्टी परीक्षण के आधार पर वनों में पौधरोपण का आया सुझाव

ऑर्गेनिक कार्बन के घटते स्तर से चिंतित

विशेष संवाददाता-शिमला

- 788 वन मंडलों के लिए वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड तैयार

वन विभाग के पीसीसीएफ राजीव कुमार ने वन मृदा में ऑर्गेनिक कार्बन के घटते स्तर पर चिंता जताई है। उन्होंने वन मृदा की गुणवत्ता बताने को एचएफआरआई के प्रयासों की सराहना की और मिट्टी विश्लेषण आधार पर उचित प्रजातियों के पौधरोपण के सुझाव प्रस्तुत करने की आवश्यकता पर जोर दिया। पीसीसीएफ राजीव कुमार मंगलवार को हाइब्रिड मोड वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड विषय पर आयोजित परामर्श बैठक को संबोधित कर रहे थे। इस मौके पर उन्होंने बैठक में सामने आए सुझावों को मानने का आह्वान किया। इस मौके पर संस्थान के निदेशक (प्रभारी) डा. संदीप शर्मा ने एचएफआरआई ने वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड तैयार करने के बारे में चर्चा की और वन पारिस्थितिक तंत्र में मृदा के महत्व पर प्रकाश डाला। तकनीकी सत्र में वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. विजेंद्र पाल पंवार परियोजना की अवधारणा, इसके उद्देश्यों और परिणामों के बारे में बताया। वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड तैयार करना वानिकी क्षेत्र में पहली पहल है और आईसीएफआरई के विभिन्न संस्थान भारत के 788 वन मंडलों के लिए वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड तैयार करने का कार्य कर रह है। तदोपरांत, परियोजना के अन्वेषक व वरिष्ठ वैज्ञानिक डा आरके वर्मा ने हिमाचल प्रदेश के वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड पर ए विस्तृत प्रस्तुति दी। उन्होंने विभि वनमंडलों के मृदा के परीक्ष अलग अलग मापदंडों, परीक्ष मानकों पर जानकारी प्रदान क डा. वर्मा ने प्रतिभागियों के स वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड प्रोटोटाइप भी साझा किया। प्रस के बाद वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड विषय वस्तु पर चर्चा की गई

वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड बनाने की रूपरेखा तय

शिमला। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला ने प्रदेश वन मुख्यालय (मुख्यालय) टॉलैंड में मंगलवार को हाइब्रिड मोड वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड विषय पर बैठक का आयोजन किया। बैठक की अध्यक्षता राजीव कुमार पीसीसीएफ ने की। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. संदीप शर्मा ने मुख्य अतिथि तथा अन्य प्रतिभागियों स्वागत किया। उन्होंने वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड तैयार करने के बारे में चर्चा की और वन पारिस्थितिक तंत्र में मृदा के महत्व पर प्रकाश डाला। राजीव कुमार ने कहा कि वन मृदा में आर्गेनिक कार्बन के घटते स्तर पर चिंता व्यक्त की। मिट्टी का विश्लेषण कर उचित पौधरोपण का सुझाव दिया। संवाद

Organic Carbon Depleting Fast in Forests Soil: Scientists Warn

Category: Latest Published: 14 May 2024 Hits: 88

Author: HimbuMailNewsService

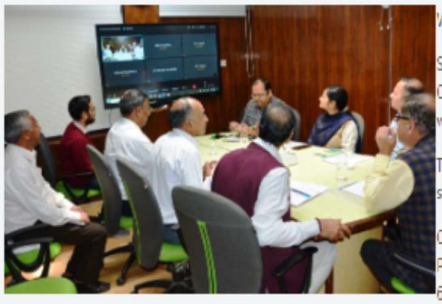

Workshop in Shimla Aims to Safeguard Forest Soil Health in Himachal...

SHIMLA: IN a proactive effort to address concerns over the depletion of organic carbon in forest soil, the Council of Forestry Research and Education (ICFRE) - Himalayan Forest Research Institute (HFRI) organized a sig workshop in Shimla.

The Forest Soil Health Card (FSHCs) Pre-release Consultation meeting, held on May 14, 2024, brought toget stakeholders in a hybrid format, including forest officials, scientists, and experts.

Chaired by Sh. Rajeev Kumar, Principal Chief Conservator of Forests & Head of Forest Force (PCCF&HoFF) of Hi Pradesh, the meeting witnessed virtual participation from various forest circles and divisions across the state, t 68 participants.

Dr. Sandeep Sharma, Director (In-Charge) of HFRI, emphasized the importance of the gathering and the ins commitment to soil health preservation.

Sh. Rajeev Kumar echoed these sentiments in his address, stressing the need for a holistic approach to forest soil health and expressing concerns over declining carbon levels.

The technical session featured Dr. Vijender Pal Panwar, Senior Scientist from the Forest Research Institute (FRI), Dehradun, and National Project Coordinator (NP outlined the project's genesis, objectives, and expected outcomes.

Dr. RK Verma, Senior Scientist at HFRI, followed with a detailed presentation on the Forest Soil Health Cards specific to Himachal Pradesh, focusing on metho sampling techniques, and analysis protocols for comprehensive soil parameters.

Participants engaged in fruitful discussions on the FSHCs, providing valuable suggestions for further enhancing the card's contents.

The meeting, expertly coordinated by Dushyant, Scientific and Technical Officer at HFRI, concluded with a formal vote of thanks, marking a significant step for safeguarding the soil health of Himachal Pradesh's forests.

This workshop ensured the long-term sustainability of the region's ecosystems.

0

– Himbumail
Install App on Your Device
Install Cancel